"दीन ल्यो या दुनियां"

परम वन्दनीय साथ जी, काफी अन्तराल के बाद आज मैं आपसे फिर रूबरू हूं। आज फिर मैं आपसे अपने दिल की चंद बातें कर रही हूं और विनती करती हूं कि यदि अच्छी लगे तो स्वीकार करना नहीं तो चरणों की रज समझ कर क्षमा कर देना। तो आइये साथ जी ज्यादा व्यर्थ की बाते न करके हम अपने विषय की ओर चलें जो धनी ने इस दिल में उपजाए उन्हीं के हुकुम से यह विषय "दीन ल्यो या दुनियां"

प्यारे साथ जी सबसे पहले तो मैं ये कहना चाहूंगी कि संसार के अन्दर अनेकों धर्म हैं व उनकी अलग-२ मंजिले परन्तु कोई भी धर्म हमें दुनियां में रहकर भी दुनिया से अलग नहीं करता अर्थात् बिना कसनी किये उस मंजिल को पा लेना जो आज तक करोड़ों वर्ष तपस्या करके भी कोई नहीं पा सका यहां तक इस दुनियां के सर्वोपरि देवी देवता भी अपने अहंकार मान व शान को नहीं छोड़ पाये जो "धनी" ने अपनी मेहर से हमें वाणी के द्वारा काफी हद तक छुड़वाया। रूहों इस ब्रह्माण्ड में आयी उनकी नजर भी इन्ही तनों पर बैठी व स्वयं धनी ने भी यहीं के तन धारण किये पर रूहों को इस वाणी ने किस तरह से संसार में रहकर भी अलग थलग कर दिया है। पहले सोचा करते थे कि इतना ऊंचा ज्ञान इतनी ऊँची मंजिल बिना कुछ किये ही मिल गयी हमने तो उसकी कीमत भी अदा नहीं की अब पता चलता है कि कीमत भी मेरे पिया ने कितनी सस्ती रखी है कि दुनिया में रहकर भी दुनियां से अलग रहो। अपने आपको पूर्णतया समर्पित कर दो। अब कहने को तो समर्पण शब्द छोटा है। परन्तु अपने अन्दर सब कुछ समेटे हुआ है। टोटली अपने आपको मारकर अर्थात् मैं खुदी को हटाकर मात्र माया के फर्ज पूरे करो यही समर्पण है क्योंकि साथ जी माया के ब्रह्माण्ड में यदि हम अपने "धनी" को प्राप्त करना चाहते है हर पल हर घड़ी यदि उसे अपने करीब महसूस करना चाहते है तो समर्पित तो होना ही पड़ेगा। कीचड़ में कमल की तरह रहना होगा। हमारे पास दो रास्ते है कि या तो हम उसे पा लें या दुनिया को। यदि हम धनी को पाना चाहते हैं तो फिर हमें माया से मुख मोड़ना होगा अब वाणी ये नहीं कहती कि आप सब कुछ छोड़ दीजिए पर जो अपने प्रियतम के रास्ते में बाधा बने या रुकावट बने उसे हटा कर "धनी की ओर बढ़िये फिर देखिए आपका सब कुछ वो अपने आप ही संवार देंगे। फिर भी सौदा सस्ता है। वो परमधाम जो आज हमें बहुत दूर लगता है जिसके लिए हम नक्शे देखते हैं व सुबह मुंह अंधेरे उठकर चितवनिया करते हैं। आपके समर्पण हो जाने पर वह पल आपको करीब लगेगा आप अपने आपको हर पल "धनी" में लीन पायेंगे दुनियां अपने आप दूर होती जाएगी। मोह माया काफी हद तक छूट जाएगी। जिस दिल में उसकी सूरत होती है वहां तो हर पल दीवानगी का आलम रहता है वह तो मात्र अपने फर्ज पूरे करता है गर्क नहीं होता।

हमारी सबकी यही इच्छा रहती है कि हमें दीन और दुनियां दोनो एक साथ मिले। हम बहुत स्याने हैं। हम दोनो को एक साथ पाना चाहते है पर चूंकि दीवानो को तो पत्थर पड़ा ही करते हैं यह हम शुरु से ही ब्रह्माण्ड में देखते आये हैं और पत्थर कौन खाये क्योंकि हमें तो अपनी इज्जते बहुत प्यारी है और धनी कहते हैं कि यदि तू मुझमें लीन होना चाहती है तो पत्थर खाने की आदत भी डाल ले अर्थात् दुनिया की इज्जत मान मर्यादा के लिए आपना दीन ना गवां।

Nijanand App

अपने प्रियतम से हमारा नाता प्रेयसी का है हम सभी उसकी प्रेयसिया तो बनना चाहते हैं पर उसकी कीमत चुकाना नहीं चाहते और वो कोई तपस्या नहीं कोई घर छोड़ने को नहीं कहते मात्र घर में रहकर भी "धनी में गर्क रहो। दुनिया में रहकर भी उससे अलग रहो। जो हमसे हो नहीं रहा तो फिर हमें "पिया मिलेंगे कहां से" यदि यहां कोई उस राह पर चलकर कुर्बानी देता भी है तो हम स्वयं तो पूनी कातते नहीं दूसरों का तकला भी भान देते हैं उसकी भी टांग खींचने से बाज नहीं आते।

साथ जी हम सब कुछ छोड़कर "पिया" के चरणों में समर्पित हों तो सही फिर देखिए कैसे वो हमारे सिर पर एक टांग से खड़े होते हैं वो तो उस दिल को ही अर्श बना देते हैं जो उसके लिए आसन बना देते हैं। पाना तो हम सब कुछ चाहते है पर कुर्बानी कौन दे, हम तो दीन दुनिया दोनों ही चाहते हैं पर यहां सर के होते हैं सौदे, आशिकी इतनी सस्ती नहीं है।

अब यहां कोई सर कटाने से मतलब नहीं है अर्थात् अपने धनी के चरणों में अपने आपको फना कर देना। जब तक हम पूरी तरह समर्पित नहीं होते हम अधर में लटकते रहेंगे। ना तो दीन ही हाथ लगेगा ना दुनियां।

इसलिए साथ जी सिर्फ इतना विचार करिये कि हम कहां के हैं और यहां क्या कर रहे हैं क्या जो कर रहे हैं वह हमारी रिवायत है। वह हमें शोभा दे रहा है वक्त आखरत आ गया है और हमने सूत काता भी है या नहीं या यूं ही बैठकर अपना व दूसरों का समय भी व्यर्थ कर रहे हैं तो साथ जी जो वादा परमधाम में किया था कि तू भूली तो मैं तुंझे और मैं भूली तो तू मुझे जगा लेना उसी नाते से कहूंगी कि दिल में विचार करके देखिए और फिर अपने धनी के प्रति अपने को तौलिये कि क्या हम उस पर खरे उतर रहे हैं क्या हम परमधाम के नाते से यहां चल रहे हैं वहां हम एक पल भी अपने धनी व साथ से दूर नहीं होते थे या दुनियां के पीछे भाग रहे हैं।

साथ जी अभी भी समय है अपनी पूनी संभालिए और जितना भी समय बचा है ईमानदारी से अपनी पूनी कातिये फिर देखिए आगे का रास्ता कितना सुगम हो जाएगा। फिर कुछ नहीं करना बस "इतहीं बैठे घर जागे धाम।

सुन्दरसाथ की चरण रज
श्रीमती किरण सेठी
देहली

Nijanand App